National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(67): 125-127
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

निलिमा पाण्डेय
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, ११०००७

Correspondence:
निलिमा पाण्डेय
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, ११०००७

आधुनिक प्रमुख संस्कृत महिला नाटककारों का अवदान

निलिमा पाण्डेय

सारांश

संस्कृत साहित्य की दीर्घ परम्परा में नाट्यविधा का विशिष्ट स्थान है। वैदिक संवाद-सूक्तों से विकसित भारतीय नाट्यपरम्परा भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, दशरूपक आदि सिद्धान्त-ग्रन्थों से पुष्ट होती हुई आधुनिक काल तक निरन्तर प्रवाहित रही है। आधुनिक संस्कृत साहित्य में महिला रचनाकारों ने कविता, गद्य, नाटक, एकांकी, संगीतनाट्य तथा अन्य रूपकों के माध्यम से उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्राचीन एवं मध्यकालीन महिला नाट्यकारों की परम्परा की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए आधुनिक प्रमुख संस्कृत महिला नाटककारों—रमा चौधरी, लीलाराव दयाल, कमलारत्नम्, वनमाला भवालकर, देवकी मेनन, वीणापाणि पाटनी, नलिनी शुक्ला, मिथिलेश कुमारी मिश्रा, रत्नमयी देवी दीक्षित आदि के नाट्य-अवदान का विवेचन किया गया है। शोध का मुख्य प्रतिपाद्य यह है कि आधुनिक महिला नाट्यकारों ने परम्परा को बनाए रखते हुए समकालीन सामाजिक, राष्ट्रीय, नैतिक और मानवीय प्रश्नों को नाट्य-अभिव्यक्ति प्रदान की।

संकेत शब्द - आधुनिक संस्कृत साहित्य, महिला नाटककार, संस्कृत नाट्यपरम्परा, नाट्यशास्त्र, सामाजिक चेतना, रूपक, नारी-सृजन।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य भारतीय समाज और संस्कृति का महत्त्वपूर्ण दर्पण रहा है। नाटक संस्कृत साहित्य की गौरवपूर्ण विधाओं में से एक है और इसकी दृश्यता, अभिनयशीलता तथा सामूहिक आस्वाद-क्षमता के कारण इसका साहित्यिक एवं सामाजिक महत्त्व विशिष्ट है। परम्परा में **'नाटकान्तं कवित्वम्'**[1] जैसी उक्ति नाट्य की समन्वयी प्रकृति की ओर संकेत करती है। भरतमुनि ने नाट्य को व्यापक लोक-उपयोगिता वाला माध्यम माना है। इस दृष्टि से नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि लोकशिक्षा, व्यवहारज्ञान, हितोपदेश और सामाजिक अनुभूति की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

संस्कृत नाट्यपरम्परा और आधुनिकता

भारतीय नाट्यपरम्परा की जड़ें वैदिक संवाद-सूक्तों तक देखी जाती हैं। पुरूरवा-उर्वशी, यम-यमी, विश्वामित्र-नदी तथा सरमा-पणि जैसे संवादों में नाटकीय सम्भावनाएँ दिखाई देती हैं।[2] आगे चलकर भास, शूद्रक, अश्वघोष, कालिदास, हर्ष, विशाखदत्त, भवभूति, भट्टनारायण, राजशेखर आदि नाटककारों ने संस्कृत नाट्य-साहित्य को समृद्ध किया। आधुनिक संस्कृत साहित्य के काल-निर्धारण में विद्वानों में मतभेद मिलता है। उपलब्ध सामग्री में आधुनिक काल के लिए 17वीं, 18वीं तथा 19वीं शती से आरम्भ माने जाने वाले विभिन्न मतों का उल्लेख है। आधुनिकता का निर्धारण केवल कालक्रम से नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक परिवर्तन तथा उनके साहित्य पर प्रभाव से भी किया जाता है। डॉ. हीरालाल शुक्ल ने 1835 से 1920 के काल को संस्कृत नवजागरण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना है, जबकि अन्य विद्वानों ने आधुनिक संस्कृत साहित्य का विस्तृत काल 1800 ई. से वर्तमान

तक माना है।[3] आधुनिक संस्कृत साहित्य की विशेषता यह रही कि पारम्परिक शिल्प को स्वीकार करते हुए विषय-वस्तु में नवीनता आई। राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक समस्याएँ, जनजागरण, नारी-जागरण, मूल्य-चेतना और देशभक्ति जैसे विषय साहित्य-सृजन के केन्द्र में आए।[4]

संस्कृत महिला साहित्यकारों की परम्परा

संस्कृत में महिला-सृजन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक साहित्य में अपाला, घोषा, विश्ववारा, वागम्भृणी, रोमशा, लोपामुद्रा, सूर्या-सावित्री आदि ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है। लौकिक एवं मध्यकालीन संस्कृत साहित्य में विज्जका, शीला-भट्टारिका, मारुला, मोरिका, गंगादेवी, रामभद्राम्बा और तिरुम-लांबा जैसी विदुषियों का योगदान उल्लेखनीय है। इस परम्परा ने आधुनिक महिला साहित्यकारों के लिए सृजनात्मक आधार निर्मित किया।

प्राचीन महिला नाटककारों से आधुनिक परम्परा तक

उपलब्ध सामग्री के अनुसार विजयभट्टारिका/विज्जका को प्राचीन ज्ञात महिला नाट्यकारों में प्रमुख स्थान दिया गया है। उनसे सम्बद्ध 'कौमुदीमहोत्सव' का उल्लेख मिलता है। इसी परम्परा में आनंदल-तिका आदि रचनाओं का उल्लेख है। आधुनिक युग में महिला नाट्यकारों ने इस परम्परा को नई विषयवस्तु, सामाजिक चेतना और विविध नाट्यरूपों के माध्यम से आगे बढ़ाया।

आधुनिक प्रमुख संस्कृत महिला नाटककार

डॉ. रमा चौधरी

डॉ. रमा चौधरी आधुनिक संस्कृत नाट्य-साहित्य की प्रमुख महिला रचनाकारों में हैं। उपलब्ध शोध-सामग्री के अनुसार उन्होंने लगभग पच्चीस रूपकों की रचना की। उनकी प्रमुख नाट्यकृतियों में 'यतीन्द्रयतीन्द्रम्', 'शंकरशंकरम्', 'देशदीपम्', 'पल्लीकमलम्', 'कवि-कुलकोकिलम्', 'मेधमेदुरमेदनीयम्', 'युगजीवनम्' और 'निवेदितम्' आदि का उल्लेख मिलता है। लेखन के साथ प्रकाशन और मंचन में भी उनकी सक्रियता रही।

श्रीमती लीलाराव दयाल

लीलाराव दयाल की नाट्यकृतियों में 'होलिकोत्सवम्', 'कटुवि-पाकः', 'मिथ्याग्रहणम्', 'क्षणिकविभ्रमः', 'तुकारामचरितम्', 'असू-यिनी', 'वीरभा' तथा 'स्वर्णपुरकृषीवलाः' आदि का उल्लेख है। उनकी रचनाओं से महिला नाट्य-सर्जना की विषय-विविधता और रूपक-विधा के प्रति अनुराग स्पष्ट होता है।

श्रीमती कमलारत्नम्

कमलारत्नम् ने संस्कृत नाट्य-विधा के विकास के लिए विशेष कार्य किया। उनकी उपलब्ध नाट्यकृतियों में 'गणयद्दागः', 'विवेकानन्द-विजयम्', 'विक्रमवेतालनाटिका', 'नचिकेता-यम-संवादम्' तथा 'विवेकानन्दस्मृतिः' का उल्लेख है। उन्होंने संस्कृत रंगमंच की स्थापना के माध्यम से नाट्य के मंचीय पक्ष को भी महत्त्व दिया।

डॉ. वनमाला भवालकर

वनमाला भवालकर की संस्कृत नाट्यकृतियों में 'रामवनगमन', 'पार्वतीपरमेश्वरीयम्' और 'पाददण्डः' का उल्लेख मिलता है; 'सीताहरणम्' और 'अन्नदेवता' को अप्रकाशित रचनाओं के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। उनकी रचनाएँ परम्परागत आख्यानों को आधुनिक नाट्य-संवेदना से जोड़ने की सम्भावना प्रस्तुत करती हैं।

डॉ. रत्नमयी देवी दीक्षित

रत्नमयी देवी दीक्षित का सम्बन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस से रहा। उपलब्ध सामग्री में उनके शोध-विषय 'Women in Sanskrit Dramas' का उल्लेख है। उन्होंने 'केरलीसाहित्यदर्पणम्' के माध्यम से केरल के कवियों और कवयित्रियों के साहित्य का विवेचन किया तथा मामा वरेरकर के मराठी नाटक का संस्कृत रूपान्तरण 'भूमिकन्या' के रूप में किया।

डॉ. वीणापाणि पाटनी

वीणापाणि पाटनी की 'मधुराम्लम्' पाँच एकांकियों का संग्रह है, जिसका हिन्दी रूपानुवाद 'खट्टा-मीठा' बताया गया है। एकांकी-विधा के माध्यम से उन्होंने आधुनिक संस्कृत नाट्य की संक्षिप्त एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति को समृद्ध किया।

डॉ. नलिनी शुक्ला

नलिनी शुक्ला संस्कृत की कवयित्री, लेखिका और नाट्यकर्त्री के रूप में उल्लिखित हैं। उनकी नाट्यकृतियों में 'राधानुनयः', 'पार्वती-तपश्चर्या' और 'मुक्तिमहोत्सवः' प्रमुख हैं। उनकी रचनाओं में परम्परागत पौराणिक-सांस्कृतिक विषयों के साथ आधुनिक साहित्यिक अभिव्यक्ति का समन्वय देखा जा सकता है।

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा

मिथिलेश कुमारी मिश्रा ने हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं में लेखन किया। उनकी संस्कृत रचनाओं में 'आम्रपाली' नाटिका के साथ 'सुभाषितसुमनोजलिः' और 'व्यासशतकम्' का उल्लेख है। यह योगदान आधुनिक संस्कृत में बहुभाषिक एवं बहुविध साहित्यिक सृजन की प्रवृत्ति को रेखांकित करता है।

देवकी मेनन

देवकी मेनन ने 'कुचेलवृत्तम्' और 'सैरंध्रीप्रेक्षणकम्' नामक संगीत-प्रधान नाट्यकृतियों की रचना की। इससे आधुनिक संस्कृत नाट्य में संगीत और अभिनय के समन्वय की प्रवृत्ति का परिचय मिलता है।

अन्य आधुनिक नाट्यकर्त्रियाँ

उपलब्ध शोध-सामग्री में ब्रह्मचारिणी वेलादेवी, चिन्मयी माहेश्वरी, आशा, अर्चना, सुधासहाय, निर्मला शुक्ला, विजयलक्ष्मी त्रिवेदी, भक्तिसुधा मुखोपाध्याय तथा भारती वरखेडकर आदि का भी उल्लेख है। इनमें विभिन्न प्रकार के रूपक, लघुनाट्य और

नाट्यरचनाएँ उपलब्ध हैं। इस विस्तृत परम्परा से स्पष्ट है कि आधुनिक संस्कृत महिला नाट्य-सृजन किसी एक क्षेत्र या एक शैली तक सीमित नहीं है।

आधुनिक महिला नाटककारों के नाट्य-साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

पहली विशेषता परम्परा और आधुनिकता का समन्वय है। महिला नाट्यकारों ने नाट्यशास्त्रीय परम्परा, पौराणिक आख्यान और सांस्कृतिक प्रतीकों को ग्रहण करते हुए समकालीन संवेदना को अभिव्यक्ति दी। दूसरी विशेषता विषय-विविधता है- सामाजिक प्रश्न, नारी-जागरण, राष्ट्रीय चेतना, मूल्यबोध, मानवीय सम्बन्ध तथा समसामयिक समस्याएँ आधुनिक नाट्य-सृजन में स्थान पाती हैं। तीसरी विशेषता नाट्यरूपों की विविधता है, जिसमें नाटक, एकांकी, प्रहसन, भाण, संगीतनाट्य और नृत्यनाट्य आदि सम्मिलित हैं।

सामाजिक चेतना और नारी-अभिव्यक्ति

आधुनिक महिला नाटककारों का महत्त्व केवल इस बात में नहीं है कि उन्होंने संस्कृत में नाटक लिखे, बल्कि इस बात में भी है कि उन्होंने महिला अनुभव, सामाजिक सरोकार और समकालीन जीवन के प्रश्नों को नाट्य-विधा में अभिव्यक्त किया। उपलब्ध शोध-सामग्री में आधुनिक नाट्यकर्त्रियों को समसामयिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील और जागरूक बताया गया है। उनके नाटकों में सामाजिक चेतना का अध्ययन नाट्यशास्त्रीय आधार पर किया जाना इस क्षेत्र के आगे के अनुसंधान के लिए महत्त्वपूर्ण है।

मंचन, प्रसारण और नाट्य-प्रयोग

आधुनिक महिला नाट्यकारों का योगदान केवल पुस्तकाकार रचनाओं तक सीमित नहीं रहा। उपलब्ध सामग्री के अनुसार अनेक नाट्यरचनाओं का मंचन हुआ तथा कुछ का आकाशवाणी से प्रसारण भी हुआ। रमा चौधरी और लीलाराव दयाल द्वारा स्वयं अभिनय करने तथा वनमाला भवालकर, नलिनी शुक्ला और वेलादेवी आदि द्वारा अभिनय के लिए प्रेरित करने का उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक संस्कृत नाट्य लेखन और रंग-प्रयोग के बीच सक्रिय सम्बन्ध स्थापित करता है।

उपादेयता और अनुसंधान की सम्भावनाएँ

आधुनिक संस्कृत महिला नाटककारों का साहित्य अभी भी पर्याप्त रूप से शोध और मूल्यांकन का विषय नहीं बन पाया है। अनेक रचनाएँ प्रकाशित हैं, कुछ पत्र-पत्रिकाओं में उपलब्ध हैं और कुछ अप्रकाशित पाण्डुलिपि या प्रतिलिपि के रूप में विद्यमान बताई गई हैं। अतः इन रचनाओं का संग्रह, सम्पादन, पाठालोचन, नाट्य-शास्त्रीय विश्लेषण, मंचीय अध्ययन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यांकन भविष्य के अनुसंधान की महत्त्वपूर्ण दिशाएँ हो सकती हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक संस्कृत महिला नाटककारों ने संस्कृत नाट्य-साहित्य की परम्परा को न केवल जीवित रखा, बल्कि उसे आधुनिक सामाजिक और मानवीय सरोकारों से जोड़ा। रमा चौधरी से लेकर लीलाराव दयाल, कमलारत्नम्, वनमाला भवालकर, रत्नमयी देवी दीक्षित, वीणापाणि पाटनी, नलिनी शुक्ला, मिथिलेश कुमारी मिश्रा और देवकी मेनन आदि तक विस्तृत यह परम्परा रचनात्मक विविधता का परिचायक है। इनके साहित्य में परम्परागत नाट्य-शिल्प और आधुनिक विषय-वस्तु का समन्वय दिखाई देता है। नाटक, एकांकी, संगीतनाट्य और अन्य रूपकों में उनकी सक्रियता संस्कृत की जीवन्तता तथा भारतीय सांस्कृतिक चेतना को प्रमाणित करती है। अतः आधुनिक संस्कृत महिला नाट्य-साहित्य का व्यवस्थित संकलन, आलोचनात्मक सम्पादन और नाट्यशास्त्रीय अध्ययन संस्कृत साहित्य-अनुसंधान की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

- ऋषि, उमाशंकर, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्ब विश्वभारती, 2010.
- अंकुर, देवेन्द्र राज. दूसरे नाट्यशास्त्र की खोज. वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2011.
- उपाध्याय, बलदेव. संस्कृत साहित्य का इतिहास. शारदा संस्थान, वाराणसी, 1973.
- उपाध्याय, रामजी. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका. 1962.
- गार्गी, बलवन्त. रंगमंच. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968.
- गैरोला, वाचस्पति. संस्कृत साहित्य का इतिहास. चौखम्बा, वाराणसी, 1960..
- त्यागी, अर्चना. नाट्यशास्त्रीय वस्तु विवेचन. दिल्ली विश्व-विद्यालय, 1994.
- त्रिपाठी, दयाशंकर. छत्रपति साम्राज्य एक परिशीलन. विद्या निधि प्रकाशन, दिल्ली, 2012.
- त्रिपाठी, रमाकान्त. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त. चौखम्बा, वाराणसी, 1969.
- त्रिपाठी, राधावल्लभ (प्रो.). संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2001

सन्दर्भ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्टसंख्या - ४३६
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्टसंख्या - ४३७
3. बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, आधुनिक संस्कृत साहित्य की पृष्ठभूमि एवं साहित्यिक परम्परा।
4. हीरालाल शुक्ल, आधुनिक संस्कृत साहित्य, आधुनिक संस्कृत साहित्य के काल-विभाजन और नवजागरण सम्बन्धी विवेचन।